REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

विद्यालयी विविधता के संदर्भ में शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

डॉ. सपना शर्मा
एसोशिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का विद्यालयी विविधता के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। विद्यालय विविधता के अन्तर्गत राजकीय व निजी विद्यालय, ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय विद्यालय तथा बालिका व सहशैक्षिक विद्यालय के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु 204 शिक्षार्थियों का चयन किया गया तथा एस. के. मंगल एवं शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, मध्यमान व 'टी' टेस्ट का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन में पाया गया कि विद्यालयवार शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि स्तर में भिन्नता पायी जाती है तथा ग्रामीण व शहरी विद्यालय के शिक्षार्थियों की एवं बालिका विद्यालय व माध्यमिक विद्यालयों की बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

कुंजी शब्द : संवेगात्मक बुद्धि, विद्यालयी विविधता

प्रस्तावना :

किसी भी देश का आधार उसकी शिक्षा है। शिक्षा का लक्ष्य है व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना, ताकि व्यक्ति समाज व राष्ट्र के विकास से अपना योगदान दे सकें। शिक्षा बालक के विकास और व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण एवं आवश्यक साधन है। दीर्घकाल से ही विश्वास किया जाता था कि जीवन की सफलता व्यक्ति के संज्ञानात्मक पक्षों पर निर्भर करती है, जिनका सम्बन्ध व्यक्ति की बुद्धिलब्धि से होता है। किसी भी व्यक्ति की जीवन की सफलता विभिन्न प्रकार की बुद्धियों तथा संवेगों के नियंत्रण पर निर्भर करती है। संवेग अधिकांशतः बाह्य उद्दीपकों के द्वारा उत्तेजित होते हैं और सांवेगिक अभिव्यक्ति उन्हीं बाह्य उद्दीपकों से सम्बन्धित है, जिसके कारण संवेगों में उत्तेजना आती है। **गोलमैन** के अनुसार ''सांवेगिक बुद्धि व्यक्ति के स्वयं के व एक–दूसरे के संवेगों के पहचानने की वह क्षमता है जो हमें प्रेरित कर सकने और हमारे संवेगों को अपने सम्बन्धों के दौरान अपनी भली भाँति साधने में सहायक होती है।'' **साल्वे मेयर** के अनुसार ''संवेगात्मक बुद्धि वह क्षमता है जिसके द्वारा हम अपनी तथा अन्य किसी की भावनाओं और संवेगों का अवलोकन करते है।''

संवेगात्मक बुद्धि किसी भी बालक के विकास हेतु अति आवश्यक है। बालक परिवार व विद्यालय दोनों में ही शिक्षा प्राप्त करता है। प्रशासन व संगठनात्मक दृष्टि से भी विद्यालय की कार्यप्रणाली में भिन्नता होती है। बालक की क्षेत्रीय पृष्ठभूमि (ग्रामीण व शहरी) भी कहीं न कहीं संवेगात्मक बुद्धि को प्रभावित करती है। यदि विद्यालय भी ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय हो तो बालक की संवेगात्मक बुद्धि में भिन्नता होती है। बिहारी एवं पठान (2006) ने माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि, उपाध्याय (2006) ने संवगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, गुप्ता एवं कौर (2006) ने भावी अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि तथा प्रिदयदर्शनी (2005) ने व्यावसायिक भिन्नता के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया।

विद्यालयी विविधता के आधार पर कुछ प्रश्न उठते है कि राजकीय व निजी विद्यालय, बालका विद्यालय व सहशैक्षिक विद्यालय तथा ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय विद्यालय में अध्ययनरत् शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि कैसी है? व क्या भिन्नता पायी जाती है ? यह जानने के लिए निम्न शोध समस्या का चयन किया गया।

शोध समस्या :

विद्यालयी विविधता के संदर्भ में शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

शोध उद्देश्य :

(1) राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
(2) निजी विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
(3) ग्रामीण क्षेत्रोय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
(4) शहरी क्षेत्रीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
(5) बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
(6) सह–शैक्षिक विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पना अग्रलिखित हैं –
(1) राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।
(2) निजी विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।
(3) राजकीय व निजी विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
(4) ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।
(5) शहरी क्षेत्रीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।
(6) ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
(7) बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।
(8) सहशैक्षिक विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।
(9) बालिका व सहशैक्षिक विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या :

(1) **राजकीय विद्यालय** – प्रस्तुत अध्ययन में सरकार द्वारा पूर्णतः अनुदानित एवं नियंत्रित विद्यालय ही राजकीय विद्यालय है।
(2) **निजी विद्यालय** – प्रस्तुत अध्ययन में निजी विद्यालय से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जो किसी व्यक्ति, संस्था, समाज या ट्रस्ट के द्वारा संचालित है।
(3) **ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालय** – प्रस्तुत अध्ययन में वे राजकीय व निजी विद्यालय जो ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है।
(4) **शहरी क्षेत्रीय विद्यालय** – प्रस्तुत अध्ययन में वे राजकीय व निजी विद्यालय जो शहरी क्षेत्र में स्थित है।
(5) **बालिका विद्यालय** – प्रस्तुत अध्ययन में बालिका विद्यालय से तात्पर्य उन राजकीय व निजी विद्यालय से है जहां केवल बालिकाओं को ही विद्यालय में प्रवेश व शिक्षा दी जाती है।
(6) **सहशैक्षिक विद्यालय** – प्रस्तुत अध्ययन में सहशैक्षिक विद्यालय से तात्पर्य उन राजकीय व निजी विद्यालयों से है जहां छात्र–छात्राओं दोनों को ही प्रवेश व शिक्षा दी जाती है।

अध्ययन के चर :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजकीय विद्यालय, निजी विद्यालय, ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालय, शहरी क्षेत्रीय विद्यालय, बालिका विद्यालय एवं सहशैक्षिक विद्यालय स्वतंत्र चर तथा संवेगात्मक बुद्धि आश्रित चर है।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण :

शोध अध्ययन हेतु ''एस. के. मंगल एवं शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि'' उपकरण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों के स्रोत :

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी प्रदत्तों के स्रोत के रूप में है।

जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय व निजी विद्यालय में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजकीय विद्यालय के 106, निजी विद्यालय के 98 विद्यार्थियों का चयन किया है। जिसमें ग्रामीण विद्यालय के 95, शहरी विद्यालय के 109 तथा बालिका विद्यालय के 56 व सहशैक्षिक विद्यालय के 54 बालिकाओं का चयन किया गया। न्यादर्शन हेतु बहुस्तरीय न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया हैं

प्रदत्तों की प्रकृति :

शोध अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

प्रदत्त विश्लेषण :

परिकल्पना (1) राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।

सारणी (1) राजकीय विद्यालय के शिक्षार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के स्तर

उच्च स्तर		औसत स्तर		निम्न स्तर	
शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत	शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत	शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत
40	38%	50	47%	16	15%

ग्राफ (1)

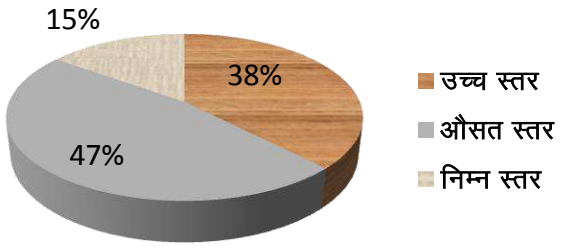

परिकल्पना (2) निजी विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।

सारणी (2) निजी विद्यालय के शिक्षार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के स्तर

उच्च स्तर		औसत स्तर		निम्न स्तर	
शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत	शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत	शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत
34	35%	40	41%	24	24%

ग्राफ (2)

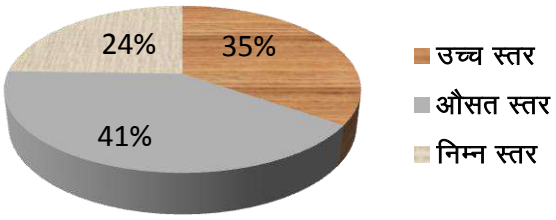

परिकल्पना (3) राजकीय व निजी विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी (3) राजकीय व निजी विद्यालय के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी प्रदत्त

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता के अंश	'टी' का मान
राजकीय	106	41.47	4.89	202	1.89
निजी	98	39.32	4.51		

(स्वतंत्रता के अंश 202 के लिए 0.05 स्तर पर 'टी' का मान 1.97)
अतः परिकल्पना (3) स्वीकृत होती है।

परिकल्पना (4) ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।

सारणी (4) ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालय के शिक्षार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के स्तर

उच्च स्तर		औसत स्तर		निम्न स्तर	
शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत	शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत	शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत
38	40%	25	26%	32	34%

ग्राफ (3)

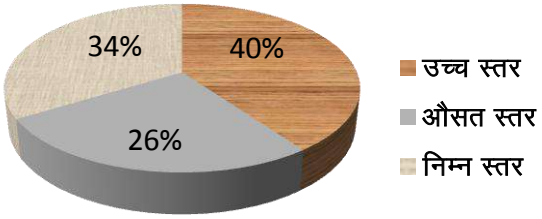

परिकल्पना (5) शहरी क्षेत्रीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।

सारणी (5) शहरी क्षेत्रीय विद्यालय के शिक्षार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के स्तर

उच्च स्तर		औसत स्तर		निम्न स्तर	
शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत	शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत	शिक्षार्थियों की संख्या	प्रतिशत
34	31%	45	41%	30	28%

ग्राफ (4)

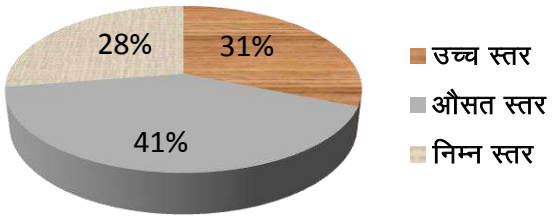

परिकल्पना (6) ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय विद्यालय में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सारणी (6) ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय विद्यालय के शिक्षार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी प्रदत्त

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता के अंश	'टी' का मान
ग्रामीण	95	73.70	5.88	202	1.98
शहरी	109	65.34	5.90		

(स्वतंत्रता के अंश 202 के लिए 0.05 स्तर पर 'टी' का मान 1.97)
अतः परिकल्पना (6) अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना (7) बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।

सारणी (7) बालिका विद्यालय के बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि के स्तर

उच्च स्तर		औसत स्तर		निम्न स्तर	
बालिकाओं की संख्या	प्रतिशत	बालिकाओं की संख्या	प्रतिशत	बालिकाओं की संख्या	प्रतिशत
22	39%	19	34%	15	27%

ग्राफ (5)

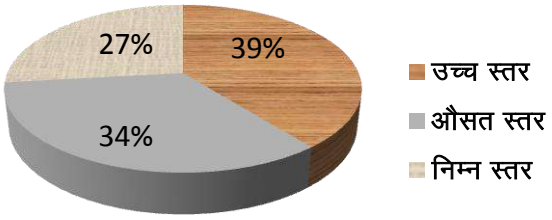

परिकल्पना (8) सहशैक्षिक विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता होती है।

सारणी (8) सहशैक्षिक विद्यालय के बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि के स्तर

उच्च स्तर		औसत स्तर		निम्न स्तर	
बालिकाओं की संख्या	प्रतिशत	बालिकाओं की संख्या	प्रतिशत	बालिकाओं की संख्या	प्रतिशत
20	37%	18	33%	16	30%

ग्राफ (6)

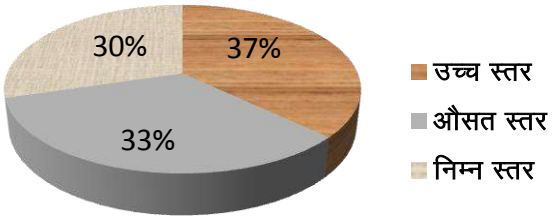

परिकल्पना (9) बालिका व सहशैक्षिक विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी (9) बालिका व सहशैक्षिक विद्यालय के बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी प्रदत्त

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता के अंश	'टी' का मान
बालिका	56	63.71	6.82	108	2.10
सहशैक्षिक	54	64.33	5.68		

(स्वतंत्रता के अंश 108 के लिए 0.05 स्तर पर 'टी' का मान 1.98)
अतः परिकल्पना (9) अस्वीकृत होती है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

(i) राजकीय विद्यालय के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता पायी गयी। राजकीय विद्यालय में अधिकतम शिक्षार्थियों (47%) की संवेगात्मक बद्धि औसत स्तर की है।

(ii) निजी विद्यालय के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता पायी गयी। निजी विद्यालय में अधिकतम शिक्षार्थियों (41%) की संवेगात्मक बद्धि औसत स्तर की है।

(iii) राजकीय व निजी विद्यालय के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(iv) ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालय के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता पायी गयी। अधिकतम शिक्षार्थियों (40%) की संवेगात्मक बद्धि औसत स्तर की है।

(v) शहरी क्षेत्रीय विद्यालय के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता पायी गयी। अधिकतम शिक्षार्थियों (41%) की संवेगात्मक बद्धि औसत स्तर की है।

(vi) ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय विद्यालय के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

(vii) बालिका विद्यालय की बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता पायी गयी। अधिकतम बालिकाओं (39%) की संवेगात्मक बद्धि औसत स्तर की है।

(viii) सहशैक्षिक विद्यालय के बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में भिन्नता पायी गयी। अधिकतम बालिकाओं (37%) की संवेगात्मक बद्धि औसत स्तर की है।

(ix) बालिका व सहशैक्षिक विद्यालय की बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ

(i) प्रस्तुत शोध अध्ययन में पाया गया कि शिक्षार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि स्तर में भिन्नता है। अतः औसत व निम्न संवेगात्मक बुद्धि स्तर को बेहतर बनाने हेतु शिक्षकों व अभिभावकों से प्रयास अपेक्षित है।

(ii) सहशैक्षिक विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं में संवेगात्मक बुद्धि स्तर में सुधार हेतु विद्यालयी वातावरण एवं सहपाठियों का व्यवहार अनुकूल हो, ताकि बालिकायें अपने संवेगों को प्रकट कर सकें।

(iii) अभिभावकों व शिक्षकों को चाहिए कि वे शिक्षार्थियों के भावों को समझें तथा उन्हें मुक्त रूप से प्रकट करने में सहायता करें।

अध्ययन की परिसीमाएँ

(i) प्रस्तुत शोध अध्ययन में संकायवार व बोर्डवार शिक्षार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन नहीं किया गया है।

(ii) प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का ही चयन किया गया है।

(iii) प्रस्तुत शोध अध्ययन में जयपुर जिले के अन्तर्गत जयपुर शहर के शहरी विद्यालय व ग्रामीण विद्यालय को ही लिया गया है।

संदर्भ

(i) **अग्रवाल, जे.सी. (2006),** ''एज्यूकेशन रिफोर्मस इन इण्डिया फोर ट्वेन्टी फस्ट सेन्चुअरी'', नई दिल्ली, शिप्रा पब्लिकेशन।

(ii) **बेस्ट, जॉन डब्ल्यू (1982),** ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'', नई दिल्ली, प्रिन्टर्स हॉल ऑफ इण्डिया, प्राइवेट लिमिटेड।

(iii) **बिहारी, पंडित वंशी एवं युनूस पठान (2006),** ''संवेगात्मक बुद्धि का माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की आयु एवं लिंग के सम्बन्ध में अध्ययन'', एज्यूट्रेक्स, नीलकमल पब्लिकेशन, हैदराबाद।

(iv) **गुप्ता, ज्योतिका एवं राजविन्दर कौर (2006),** ''भावी अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन'', एज्यूट्रेक्स, नीलकमल पब्लिकेशन्स, हैदराबाद।

(v) **गुप्ता, एस.पी. (2008),** ''सांख्यिकी विधियाँ'', इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

(vi) **कपिल, एच.के. (2006),** ''अनुसंधान विधियाँ'', आगरा बुक हाउस।

(vii) **प्रियदर्शनी (2005),** ''व्यावसायिक विभिन्नता के संदर्भ में विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन'', wwww.experimentsineducation.150.com

(viii) **उपाध्याय (2006),** ''भावात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अध्ययन'', राधा शर्मा (2016), शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ।

डॉ. सपना शर्मा
एसोशिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.